प्रातः क्लास 9/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं अपन को रूह या आत्मा समझ बैठे हो? क्योंकि बाप जानते हैं यह कुछ कठिन है। इसमें ही मेहनत है। जो आत्माभिमानी होकर बैठे हैं उनको ही महावीर कहा जाता है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना, उनको ही महावीर कहा जाता है। हमेशा अपन से पूछते रहो हम आत्म-अभिमानी हैं। याद से ही महावीर बनते हो। गोया सुप्रीम बनते हो। और जो भी धर्म वाले आते हैं वह इतने सुप्रीम नहीं बनते हैं। वह तो आते भी देरी से हैं। तुम नम्बरवार सुप्रीम बनते हो। सुप्रीम अर्थात् शक्तिवान वा महावीर। अंदर में यह खुशी होती है हम आत्मा हैं, हम सभी आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। यह भी बाप जानते हैं कोई अपना चार्ट 25% दिखाते हैं, कोई 10% दिखाते हैं। कोई कहते हैं 24घंटे में आधा घंटा याद ठहरती है, तो कितना परसेंट हुआ? अपनी बड़ी सम्भाल रखनी है। धीरे-2 महावीर बनना है। फट से नहीं बन सकते। मेहनत है। वह जो ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञानी हैं, ऐसे मत समझो वह अपन को कोई आत्मा समझते हैं। वह तो अपन को परमात्मा समझते हैं। बाकी योग किसके साथ लगाते हैं? घर से थोड़े ही योग लगाया जाता है। अभी तुम बच्चे अपन को आत्मा समझते हो। यह अपना चार्ट देखना है 24घंटे में हम कितना समय अपन को आत्मा समझते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। ऑन गॉडली सर्विस यही सभी को बताना है। बाप सिर्फ कहते हैं मन्मनाभव। अर्थात् अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह है तुम्हारी सर्विस। जितनी सर्विस करेंगे तो उतना फल भी मिलेगा। यह बात अच्छी रीति समझने की है। अच्छे-2 महारथी बच्चे भी इस बात को पूरा समझते नहीं है। देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत है। बाप तो बच्चों को क्लीयर कर समझाते हैं। पिछाड़ी तक पुरुषार्थ करते रहना है। भल कोई-2 कह देते हैं हम तो बाबा को ही याद करते हैं; परंतु वह यर्थात रीति समझते नहीं हैं। इसमें बड़ी मेहनत है। मेहनत बिगर फल थोड़े ही मिल सकता है। बाबा देखते हैं जो चार्ट बनाकर भेज देते हैं। महारथियों से तो चार्ट लिखना पहुँचता ही नहीं है। ज्ञान का अहंकार है। बाकी याद में बैठे वह मेहनत पहुँचती नहीं महारथियों से। बाप समझाते हैं मूल बात है याद की। अपन पर नज़र रखनी है हमारा चार्ट कैसे रहता है। वह नोट करना, चार्ट रखना महारथियों से पहुँचता नहीं है। कहेंगे फुर्सत नहीं। अगर याद की यात्रा में फुर्सत नहीं, तो फिर ज्ञान की यात्रा कैसे होगी? मूल बात तो बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ अलफ को याद करो। यहाँ जितना समय बैठते हो तो सच-2 अपने दिल से पूछो, हम कितना समय याद में बैठे। यहाँ जब बैठते हो तो तुमको याद में ही रहना है और चक्र फिराओ तो भी हर्जा नहीं है। हमको बाबा के पास तो ज़रूर जाना है। पवित्र सतोप्रधान होकर जाना है। इस बात को अच्छी रीत समझना है। कई तो फट से भूल जाते हैं। सच्चा-2 चार्ट अपना बताते नहीं हैं। ऐसे बहुत महारथी हैं सच तो कब नहीं बतावेंगे। आधा कल्प झूठी दुनिया चली है तो झूठ जैसे अंदर में जम गया है। इससे भी जो साधारण है वह तो झट चार्ट लिखेंगे। महारथी तो कब लिखेंगे नहीं। उन्हों को अपना ज्ञान का ही अहंकार रहता है। बाप कहते हैं तुम पापों को भस्म कर पावन होंगे याद की यात्रा से। सिर्फ ज्ञान से तुम पावन नहीं होंगे, बाकी फायदा क्या। पुकारते भी हो पावन बनने लिए। इसके लिए चाहिए याद। हरेक को सच्चाई से अपना चार्ट बताना चाहिए। यहाँ तुम ¾ घंटा बैठते हो। तो देखना है ¾ घंटे में हम कितना समय अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते थे। कइयों को तो सच बताने में लज्जा आती है। बाप को सच नहीं सुनाते हैं। वह समाचार देंगे यह-यह सर्विस की, इतने को समझाया, यह किया; परंतु याद की यात्रा का चार्ट नहीं लिखते। बाप कहते हैं याद की यात्रा में नहीं रहने कारण ही तुम्हारा कोई को तीर नहीं लगता है। ज्ञान तलवार में जौहर नहीं भरता। ज्ञान तो सुनाते हैं, बाकी योग का तीर लग जाये, यह ज़रा मुश्किल है। बाबा तो कहते हैं ¾ घंटे में 5 मिनिट भी याद की यात्रा में नही बैठते होंगे। समझते ही नहीं हैं कैसे अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करें। कई तो कहते हैं हम निरंतर याद में रहते हैं। बाबा कहते हैं यह अवस्था अभी हो नहीं सकती।

अगर निरंतर याद करते हो तो कर्मातीत अवस्था आ जाये। ज्ञान की पराकाष्ठा आ जाये। मेहनत है ना। विश्व का मालिक कोई ऐसे थोड़े ही बन जावेंगे। माया तुम्हारी बुद्धि का योग झट कहाँ न कहाँ ले जावेगी। मित्र-संबंधी आदि याद आते रहेंगे। किसको विलायत जाना होगा तो वह मित्र-संबंधी, स्टीमर आदि ही याद रहेंगे। विलायत जाने की जो प्रैक्टीकल अच्छा(इच्छा) है वह खैंचती हैं। बुद्धियोग बिल्कुल ही टूट जाता है। और कोई तरफ बुद्धि न जाये इसमें बड़ी मेहनत की बात है। सिर्फ एक बाप की ही याद रहे। यह देह याद भी न आये। यह अवस्था तुम्हारी पिछाड़ी को होगी। दिन-प्रतिदिन जितना याद की यात्रा को बढ़ाते रहेंगे उसमें तुम्हारा भी कल्याण है। जितना याद में रहेंगे उतना ही तुम्हारी कमाई होगी। अगर शरीर छोटा हो गया फिर तो यह कमाई कर न सकेंगे। जाकर छोटा बच्चा बनेंगे तो कमाई क्या करेंगे! भल आत्मा यह संस्कार ले जावेगी; परंतु टीचर तो चाहिए ना, जो फिर स्मृति दिलावें। बाप भी स्मृति दिलाते हैं ना, बाप को याद करो। यह सिवाय तुम्हारे और कोई को पता नहीं है कि बाप की याद से ही हम पावन बनेंगे। वह तो गंगा स्नान को ही ऊँच मानते हैं। इसलिए गंगा स्नान ही करते रहते हैं। बाबा तो इन सभी बातों से अनुभवी है ना। इसने तो बहुत गुरु किये हैं। वह स्नान करने जाते हैं पानी का। यहाँ तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से। सिवाय बाप की याद तुम्हारी आत्मा पावन बन ही नहीं सकती। इनका नाम ही है योग अर्थात् याद की यात्रा। ज्ञान को स्नान नहीं समझना। योग का स्नान है। ज्ञान तो पढ़ाई है। योग का स्नान है जिससे पाप कटते हैं। ज्ञान और योग दो चीज़ें हैं। याद से ही जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म होने हैं। बहुत बच्चों को यह भी पता नहीं है ज्ञान और योग किसको कहा जाता है। दोनों अलग-2 चीज़ हैं। बाप कहते हैं इस याद की यात्रा से ही तुम पावन बन सतोप्रधान बन जावेंगे। बाप तो बहुत अच्छी रीत समझाते हैं। मीठे-2 बच्चों इन बातों को अच्छी रीत समझो। यह भूलो नहीं। याद की यात्रा से ही जन्म-जन्मांतर के पाप कटेंगे। बाकी ज्ञान तो है पढ़ाई, कमाई। दोनों अलग चीज़ हैं। ज्ञान और विज्ञान। ज्ञान माना पढ़ाई। विज्ञान माना योग अथवा याद। किसको ऊँच रखेंगे, ज्ञान या योग? याद की यात्रा बहुत बड़ी है। इसमें ही मेहनत है। स्वर्ग में तो तुम सभी जावेंगे। सतयुग-त्रेता, स्वर्ग और सेमी स्वर्ग। वहाँ तो इस पढ़ाई अनुसार जाकर विराजमान होंगे। बाकी मुख्य है योग की बात। प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम आदि में भी तुम ज्ञान समझाते हो। योग थोड़े ही समझा सकेंगे। सिर्फ इतना कहेंगे अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाकी ज्ञान तो बहुत देते हो। बाप कहते हैं पहले-2 बात ही यह समझाओ कि अपन को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो। यह ज्ञान देने लिए ही तुम यह चित्र आदि बनाते हो। योग के लिए कोई चित्र आदि की दरकार नहीं है। चित्र सभी ज्ञान समझाने लिए बनाये जाते हैं। अपन को आत्मा समझने से ही देह का अहंकार बिल्कुल टूट जाता है। ज्ञान में तो ज़रूर मुख चाहिए वर्णन करने लिए। योग की तो एक ही बात है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। पढ़ाई में तो देह की दरकार है। शरीर बिगर कैसे पढ़ावेंगे वा पढ़ेंगे। पतित-पावन बाप है तो उनके साथ योग लगाना पड़े; परंतु यह कोई जानते ही नहीं। बाप खुद आकर सिखलाते हैं। मनुष्य मनुष्य को कब सिखला न सके। बाप ही कहते हैं मुझे याद करो। इनको कहा ही जाता है परमात्मा का ज्ञान। परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। सभी को यही समझाओ कि बेहद के बाप को याद करो। वह बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं। रावण क्या चीज़ है, यह कोई भी नहीं जानते। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं, यह किसको भी पता नहीं है फिर नर्क की स्थापना कौन करते हैं। पुरानी दुनिया बदलती है तो ज़रूर नई दुनिया बनेगी। वह तो समझते हैं ...0 हज़ार वर्ष अजन पड़े हैं। तो सतयुग में जाने की तात करें ही क्यों। वह समझते ही नहीं हैं कि नई दुनिया स्थापन होनी है, जो भगवान को याद करें। ध्यान में भी नहीं है। तो ख्याल करें ही क्यों! भगवान को याद करें ही क्यों! यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा शिव भगवान एक ही है। हमेशा कहते हैं

ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः, फिर पिछाड़ी में कहते हैं शिव परमात्माय नमः। वह ऊँच ते ऊँच है ना; परंतु वह क्या है, यह भी नहीं समझते हैं। अगर भित्तर-ठिक्कर में है तो फिर नमः काहे की? कुछ भी नहीं समझते। अर्थ रहित बोलते रहते हैं। यहाँ तो तुमको आवाज़ से परे जाना है अर्थात् निर्वाणधाम, शांतिधाम जाना है। शांतिधाम-सुखधाम कहा जाता है। वह है स्वर्ग धाम। नर्क को धाम नहीं कहेंगे। अक्षर बड़े ही सहज हैं। क्राइस्ट से 3000वर्ष पहले पैराडाइज़ था। अर्थात् देवी-देवताओं का राज्य था। तो फिर 2000 वर्ष क्रिश्चयन का हुआ। फिर देवता धर्म होना चाहिए ना? मनुष्यों की बुद्धि कुछ भी काम नहीं करती। कहते भी हैं 3000वर्ष पहले पैराडाइज़ था तो बाकी हुये 2000वर्ष। कितना क्लीयर है! ड्रामा के राज़ को न जानने कारण कितने प्लैंस आदि बनाते रहते हैं। यह बातें बड़ी अवस्था वाली बूढ़ी-2 माताएँ तो समझ न सकें। बाप समझाते हैं अभी तुम सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। वाणी से परे जाना है। वह भल कहते हैं निर्वाणधाम गया; परंतु जाता कोई नहीं है। पुनर्जन्म फिर भी लेते ज़रूर हैं। वापस कोई भी जाता नहीं। वानप्रस्थ में जाने लिए गुरु का संग करते हैं। बहुत वानप्रस्थी आश्रम हैं। माताएँ भी बहुत हैं। वहाँ भी तुम सर्विस कर सकते हो। वानप्रस्थ का अर्थ क्या है? बाप बैठ समझाते हैं, अभी तुम सभी वानप्रस्थी हो। सारी दुनिया वानप्रस्थी है। जो भी मनुष्य मात्र देखते हो इन आँखों सभी वानप्रस्थी हैं। सर्व का सद्गति दाता एक ही सद्गुरु है। सभी को जाना ही है। जो अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं वह अपना ऊँच पद पाते हैं। इनको कहा ही जाता है कयामत का समय। कयामत के अर्थ को भी वह लोग समझते नहीं हैं। तुम बच्चों में भी नम्बरवार समझते हैं। बड़ी ऊँची मंज़िल है। सभी को समझाना है, अभी सभी को घर जाना है ज़रूर। आत्माओं को वाणी से परे जाना है। फिर पार्ट रिपीट करेंगे आने लिए; परंतु बाप को याद करते-2 जावेंगे तो ऊँच पद पावेंगे। दैवीगुण भी धारण करनी है। कोई भी गंदा काम चोरी-चकारी आदि नहीं करनी चाहिए। तुम पुण्यात्मा बने ही योग से। ज्ञान से नहीं। आत्मा पवित्र चाहिए। शांतिधाम में तो पवित्र ही जा सकते हैं। सभी आत्माएँ वहाँ रहती हैं। अभी सभी आते रहते हैं। आठ वर्ष के अंदर बाकी जो भी होंगे वह यहाँ आते रहेंगे। तो तुम बच्चों को याद की यात्रा में बहुत रहना है। यहाँ तुमको मदद अच्छी मिलेगी। एक/दो का बल मिलता है ना। तुम थोड़े बच्चों की ही ताकत काम करती है। गोवर्धन पर्वत दिखाते हैं ना अंगुली पर उठाया। तुम गोप-गोपियाँ हो ना। सतयुगी देवी-देवताओं को गोप-गोपियाँ नहीं कहा जाता है। अंगुली तुम देते हो आयरन एज्ड को गोल्डन एज्ड, नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाने। तुम एक बाप के साथ बुद्धि का योग लगाते हो। योग से ही पवित्र बनना है। इन बातों को भूलना नहीं है। यह ताकत तुमको यहाँ मिलती है। बाहर में तो आसुरी मनुष्यों का संग रहता है। वहाँ याद में रहना बड़ा मुश्किल है। इतना अडोल वहाँ तुम रह न सकेंगे। संगठन चाहिए। यहाँ सभी एकरस इकट्ठे बैठते हैं तो मदद मिलेगी। यहाँ धंधा आदि कुछ भी याद नहीं रहता, बुद्धि कहाँ जावेगी। बाहर में धंधा आदि घर-बार खैंचेगा ज़रूर। यहाँ तो कुछ है नहीं। यहाँ का वायुमण्डल अच्छा शुद्ध रहता है। ड्रामा अनुसार कितना दूर पहाड़ी पर तुम आकर बैठे हो। यादगार भी सामने खड़ा है। इसलिए बाबा कोशिश कराये रहे हैं आबू में बड़ा म्युज़ियम बन जाये। यादगार भी एक्युरेट खड़ा है। ऊपर में स्वर्ग दिखाया है। नहीं तो कहाँ बनावें? तो बाबा कहते हैं यहाँ आकर बैठते हो तो अपनी जांच करो, हम बाप की याद में बैठे हैं। स्वदर्शन चक्र भी फिरता रहे। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ, अभी वापस घर जाना है। बीज को देखने से ज़रूर सारा झाड़ सामने आ जावेगा। यह फिर है चैतन्य मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़। इनमें कितनी वैरायटी है मनुष्यों की।

अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

अपनी अवस्था की जांच अपने दिल दर्पण में सदैव करते रहने को ही पुरुषार्थी कहते हैं।